सूरज की गर्मी से जलते हुए तन को

सूरज की, गर्मी से, जलते, हुए तन को,
मिल जाए, तरुवर की छाया ॥
ऐसा ही, सुख मेरे, मन को, मिला है मैं,
जब से, शरण तेरी, आया* मेरे राम,,,,,,,
सूरज की, गर्मी से, जलते, हुए तन को,
मिल जाए, तरुवर की छाया,,,,,,,,,

भटका, हुआ मेरा, मन था कोई,
मिल ना, रहा था सहारा ॥
लहरों से लड़ती, हुई नाव को ॥ जैसे,
मिल ना, रहा हो, किनारा*,
मिल ना, रहा हो किनारा ।
उस लडखडाती, हुई नाव, को जो,
किसी ने, किनारा दिखाया,
ऐसा ही, सुख मेरे, मन को, मिला है मैं,
जब से, शरण तेरी, आया* मेरे राम,,,,,,
सूरज की, गर्मी से, जलते, हुए तन को,
मिल जाए, तरुवर की छाया,,,,,,,,,

शीतल बनी, आग चन्दन, के जैसी,
राघव, कृपा,,, हो जो तेरी ।
राघव, कृपा,,, हो जो तेरी ।
उजयाली पूनम, की हो जाए रातें,
जो थी, अमावस अँधेरी ।
उजयाली पूनम, की हो जाए रातें,
जो थी, अमावस, अँधेरी*,
जो थी, अमावस अँधेरी ।
युग युग से, प्यासी, मुरुभूमि, ने जैसे,
सावन का, संदेस पाया,
ऐसा ही, सुख मेरे, मन को, मिला है मैं,
जब से, शरण तेरी, आया* मेरे राम,,,,,,
सूरज की, गर्मी से, जलते, हुए तन को,
मिल जाए, तरुवर की छाया,,,,,,,,,

जिस राह, की मंजिल, तेरा मिलन हो,
उस पर, कदम मैं बड़ाऊँ ॥
फूलों मे, खारों मे, पतझड़, बहारो मे,
मैं ना, कभी डगमगाऊँ ।
फूलों मे, खारों मे, पतझड़, बहारो मे,
मैं ना, कभी, डगमगाऊँ*,
मैं ना, कभी डगमगाऊँ ।
पानी के, प्यासे को, तकदीर, ने जैसे,

जी भर के, अमृत, पिलाया ॥
ऐसा ही, सुख मेरे, मन को, मिला है मैं,
जब से, शरण तेरी आया*, मेरे राम,,,,,,

सूरज की, गर्मी से, जलते, हुए तन को,
मिल जाए, तरुवर की छाया ।
ऐसा ही, सुख मेरे, मन को, मिला है मैं,
जब से, शरण तेरी, आया* मेरे राम,,,,,,
सूरज की, गर्मी से, जलते, हुए तन को,
मिल जाए, तरुवर की छाया,,,,,,,,,

अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/29852/title/suraj-ki-garmi-se-jalte-huye-tan-ko

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |